S.S. College, Jehanabad
B.A. Part - I Subject - Psychology (Subsidiary)
Teacher - A.K. Sinha Date 08.07.2021

Topic – Perception (प्रत्यक्षीकरण) पृष्ठ-1

प्रत्यक्षीकरण एक संज्ञानात्मक अथवा मानसिक प्रक्रिया है। प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप ही किसी भी उत्तेजना का प्राणी तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार वातावरण में उपस्थित उत्तेजना के तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करने में अनेक मानसिक प्रक्रियाएं संलग्न होते हैं। सबसे पहले वातावरण में उपस्थित उत्तेजना को प्राणी अपने ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहण करता है तत्पश्चात ज्ञानवाही स्नायु उस उत्तेजना से उत्पन्न स्नायु-प्रवाह को मस्तिष्क के अग्र भाग में स्थापित Cerebral cortex के संबंधित क्षेत्र में पहुंचाता है जहां पर उद्दीपक (Stimulus) का Perception यानि प्रत्यक्षीकरण प्राणी द्वारा किया जाता है। ज्ञात हो कि उद्दीपन का सबसे पहले, ज्ञानेन्द्रियों के अंतिम भाग में ज्योंही स्नायु-प्रवाह उत्पन्न होता है, त्यों ही उसका संवेदना हो जाता है परन्तु उसका प्रत्यक्षीकरण मस्तिष्क में ही स्नायु-प्रवाह के जाने पर होता है। इसी लिए Wilhelm Wundt ने प्रत्यक्षीकरण को संवेदना तथा अर्थ के योग को प्रत्यक्षीकरण की संज्ञा दिया है:—

"Perception is the sum total of Sensations and their meanings."

स्पष्ट है कि संवेदना और अर्थ के बिना प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है। अर्थ का तात्पर्य यह है कि किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण करने में प्राणी सक्षम होता है जिसका आधार Mental set के रूप में मस्तिष्क में पहले से स्थापित है। अन्यथा उद्दीपन का पूर्ण तात्कालिक ज्ञान (Perception) संभव नहीं होता है। प्रत्यक्षीकरण के संबंधित अन्य परिभाषाओं द्वारा और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है

प्रत्यक्षीकरण से संबन्धित विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नांकित हैं:—

Chappman & e.al के अनुसार :—

"Perception may be defined as the process by which sensory input (to the cortex) is interpreted."

जबकि Osgood द्वारा प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा इस प्रकार दी गई है।:—

"Perception is the operation of a set of variables that intervene between sensory stimulation and awareness."

Kagan and Haveman के अनुसार :—

"Perception is the process through which we become aware of our environment by organising and interpreting the evidence of our senses."

Gibson ने प्रत्यक्षीकरण को परिभाषित करते हुए कहा कि :—

"Perception is extracting information from stimulation."

Colins & Drever के अनुसार :—

"Perception is the immediate apprehension of an object or situation affecting any or all of the sense organs by way of sensation."

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रत्यक्षीकरण में उद्दीपन की उपस्थिति से लेकर उसके तात्कालिक ज्ञान (awareness) तक जाने के अनेक प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं, जिन्हें Osgood ने a set of variables कहा है, तत्पश्चात उद्दीपकों प्रत्यक्षीकरण सम्पन्न होता है।

शेष पृष्ठ-3 पर

B.A.I Psy. (Subsidiary)

Teacher - A.K. Sinha 09.09.2021

पृष्ठ - 3

प्रत्यक्षीकरण में सन्निहित मानसिक प्रक्रियाएँ

जैसा कि प्रत्यक्षीकरण के परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। इसमें उद्दीपन की उपस्थिति से लेकर उसका संज्ञान होने तक अनेकानेक मानसिक प्रक्रियाएँ संलग्न होती हैं। इन प्रक्रियाओं को निम्नांकित शीर्षकों के रूप में वर्णन किया जा सकता है।

1. ग्राहक प्रक्रियाएँ (Receptor Processes):—

ग्राहक प्रक्रियाएँ ही प्रत्यक्षीकरण का मुख्य आधार है। इसके अन्तर्गत उद्दीपन के उपस्थित होने पर प्राणी का Sensory organ उसे ग्रहण करता है। Sense organ के अन्तिम भाग में कोशिकाओं के उत्तेजित होने के परिणाम स्वरूप स्नायु-प्रवाह उत्पन्न होता है। तत्पश्चात उत्पन्न स्नायुप्रवाह ज्ञानवाही स्नायु द्वारा सुषुम्ना से होते हुए वृहत मस्तिष्क में पहुँचता है जहाँ पर उद्दीपन से सम्बन्धित क्षेत्र में उद्दीपन का अर्थ का बोध होता है तत्पश्चात उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण होता है। इन्ही क्रियाओं को Receptor Processes की संज्ञा दी जाती है।

2. प्रतीकात्मक प्रक्रियाएँ (Symbolic Processes):—

प्रत्यक्षीकरण में ग्राहक प्रक्रियाओं के पश्चात प्रतीकात्मक प्रक्रियाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रतीकात्मक प्रक्रिया के द्वारा प्राणी के पूर्व अनुभूतियों को जागृत किया जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि प्रत्यक्षण उद्दीपन से सम्बन्धित प्रतिमाएँ (Images) प्राणी के मानस-पटल पर उभरती हैं। ये पूर्व अनुभव (उद्दीपन से सम्बन्धित) प्राणी के मस्तिष्क में स्मृतिचिन्हों के रूप में संचित रहती हैं। किसी उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण प्रतीकात्मक प्रक्रिया पर अत्यधिक निर्भर करता है। यदि किसी उद्दीपन को देखते या सुनते हैं तो उसके प्रतीक प्राणी के मस्तिष्क में पूर्व अनुभवों के स्मृतिचिन्ह

अथवा प्रतिमाओं के रूप में विद्यमान रहते हैं, वे सक्रिय हो जाते हैं और उसी के अनुरूप उस उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण होता है। उदाहरण के लिए जब प्राणी किसी बाघ को देखता है तो उसकी विभिन्न विशेषताओं - आकार, स्वभाव आदि भी चेतन हो जाती हैं। अतः यहाँ पर पूर्व अनुभव वर्तमान में उसके प्राप्त संवेदी विवरणों के लिए प्रतीक का कार्य करते हैं और उसी के आधार पर बाघ का प्रत्यक्षीकरण होता है।

3. भावात्मक प्रक्रियाएँ (Affective processes) :—

किसी भी उद्दीपन के उपस्थित होने पर जब ज्ञानवाही स्नायु द्वारा उससे सम्बन्धित स्नायु-प्रवाह जब मस्तिष्क में पहुँचता है तो उससे सम्बन्धित पूर्व अनुभव जो प्रतीक अथवा स्मृतिचिह्न उपस्थित रहते हैं उनके आधार पर प्राणी में उद्दीपन से सम्बन्धित सुखद या दुःखद भाव उत्पन्न होता है। जो प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया पर अपना प्रभाव डालता है और उसी के अनुरूप उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण होता है। उदाहरणस्वरूप - जब प्राणी गुलाब के फूल का प्रत्यक्षीकरण करता है तो उससे जुड़े सुखद या दुःखद भाव भी प्राणी के मन में उठता है या जागृत होता है। उसी के अनुसार गुलाब के फूल को प्राणी सुखद भाव अनुभव करता है तो उसे शीघ्र ही अपना लेता है या उस ओर आकर्षित हो जाता है। यदि दुःखद भाव जागृत होता है तो उससे विमुख हो जाता है या अनदेखा कर देता है। इन भावों का आधार भी प्राणी के मस्तिष्क में संचित स्मृति चिह्न होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि भावात्मक प्रक्रियाएँ भी प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करती हैं।

4. एकीकरण की प्रक्रिया (Process of Unification) :-
किसी भी उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण में एकीकरण की प्रक्रिया संचालन होती है, यहाँ पर उल्लेखनीय है कि उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण मात्र तात्कालिक ज्ञान उसके अलग-अलग तत्वों का नहीं होता बल्कि पूरे उद्दीपन का एकीकरण करने के उपरान्त ही उसका प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। जैसे:- किसी गुलाब के फूल का प्रत्यक्षीकरण में उसके तना, डण्ठल, पत्ती, पंखुड़ियों का प्रत्यक्षीकरण अलग-अलग नहीं होता है बल्कि समग्र के स्वरूप का ही प्रत्यक्षीकरण होता है। इसका कारण यह है कि मस्तिष्क में उसे एक साथ मिलाने की या एकीकरण की प्रक्रिया उत्पन्न होती है। इसी प्रक्रिया के आधार पर गेस्टाल्टवादियों द्वारा प्रत्यक्षीकरण से संबन्धित प्रत्यक्षीकरण के 'संगठनात्मक सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया।

इस प्रकार ऊपर वर्णित प्रक्रियाएँ किसी उद्दीपन के प्रत्यक्षीकरण में सन्निहित या संचालन होती हैं।